पाठ 20

एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध

आइए सीखें

- हमारे देश का विश्व से सम्पर्क कितना प्राचीन है?
- भारत से दुनिया ने क्या-क्या सीखा?
- भारत और यूरोप के बीच अरब देश किस तरह सम्पर्क सूत्र का कार्य करते थे?
- रेशम के व्यापार में भारत की क्या भूमिका थी?
- श्रीलंका तथा चीन से हमारे संबंध कितने प्राचीन है?
- भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार।
- विश्व के प्रमुख धर्मों का भारत से संबंध व प्रभाव।

प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता व संस्कृति दूर-दूर तक फैल गयी थी। साम्राज्य विस्तार के पूर्व ही भारतीय व्यापारी विश्व के अनेक देशों से अपने व्यापारिक संबंध बना चुके थे। इस पाठ में आपको पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के संबंधों की जानकारी प्राप्त होगी।

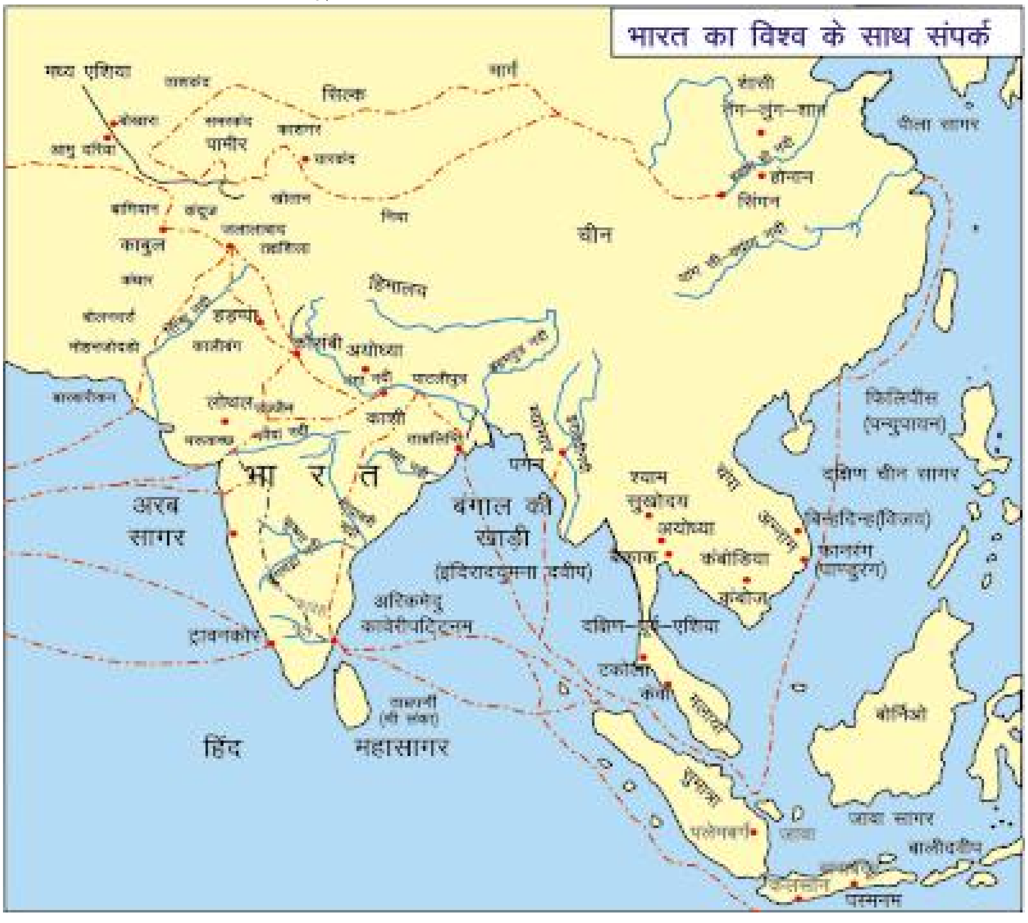

भारत का विश्व के साथ संपर्क

भारत का पश्चिम देशों से संबंध

हड़प्पा सभ्यता के उत्खनन क्षेत्रों से प्राप्त अनेक वस्तुओं से यह जानकारी मिलती है कि ईसा से कोई 3000 वर्ष पहले भारत तथा मिस्त्र एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता के बीच व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध थे। ईसा से 600 वर्ष पूर्व पहले से ही भारत के फारस, यूनान तथा रोम से संबंध थे। सिकन्दर के भारत आक्रमण के पश्चात यूनान के साथ संबंध बने। चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज था। रोमन इतिहासकार प्लिनी भारतीय वस्तुओं जैसे रेशम, कपास, आभूषण, गरम मसाले आदि के बढ़ते आयात से चिन्तित था। इस प्रकार की वस्तुओं के कारण रोम का बहुत सा धन भारत पहुँचता था। संगम साहित्य में भारत के बाहर से आए हुए लोगों को यवन कहा गया है। रोम निवासियों की एक बस्ती तामिलनाडु के अरिकमेंडु स्थान पर बसी हुई थी।

भारत का अरब देशों से संबंध

अरब देशों और भारत के संबंध अति प्राचीन रहे हैं। अरबों ने भारत से भारतीय अंक पद्धति तथा दशमलव प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया। वे भारतीय अंकों को हिन्दसा कहते थे। अरबों से इस ज्ञान को यूरोपवासियों ने प्राप्त किया। इसीलिए यूरोप में इन अंकों को अरबी अंक कहा जाता था। इस्लाम धर्म के उदय के बाद अरबों ने भारत व यूरोप के बीच जाने वाले स्थल मार्ग पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार वे भारत तथा यूरोप के बीच एक कड़ी बन गये। विज्ञान, गणित, ज्योतिष, औषधि विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अध्ययन पहले अरबवासी भारत में करते थे।

भारत का मध्य एशिया से संबंध

पहाड़ी प्रदेश होने के कारण मध्य एशिया के खोतान, कूची, कैराशहर तथा काशगर सहज सम्पर्क में नहीं थे। परन्तु मध्य एशिया के इन नगरों के बीच सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध अत्यधिक प्राचीन थे। महाभारत में धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का उल्लेख मिलता है। गंधार प्रदेश इसी क्षेत्र में विद्यमान था। इसी क्षेत्र को वर्तमान में अफगानिस्तान कहते हैं। गंधार प्रदेश बौद्ध धर्म तथा कला का बहुत बड़ा केंद्र था। बुद्ध की प्राचीनतम प्रतिमाएं इसी क्षेत्र में बनी। सम्राट अशोक ने अपने धर्म प्रचारकों को मध्य एशिया में भेजा था। उसके दो अभिलेख इस क्षेत्र में मिले हैं।

रूस के दक्षिण भाग में प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। सुर्खान नदी के तट पर हलचयन तथा उज्बेकिस्तान के दक्षिण में दल्वेर्जिन तेपें उत्खनन में कुषाण काल में कला के विकास तथा उस पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के बारे में रोचक जानकारियां मिली हैं।

भारत का चीन से संबंध

भारत के बौद्ध धर्म का चीन में प्रवेश ह्वान वंश (202 ई.पू. से 600 ई.) के शासन काल में हुआ। भारत और चीन के रास्ते में स्थित खोतान में बौद्ध धर्म का खूब प्रसार हुआ। यहीं से यह धर्म चीन में फैला। चीनियों ने दूसरी शताब्दी ई.पू. से भारत में शिक्षा एवं बौद्ध धर्म का ज्ञान प्राप्त करने हेतु आना प्रारंभ किया। चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद सर्व प्रथम कश्यप मातंग ने किया। जो चीन देश को ई. सन् 56 में गया था। चीन से बौद्ध धर्म सन् 372 ई. में कोरिया में और सन् 538 ई. में जापान में प्रचारित हुआ। अमोघवज्र भारतीय बौद्ध विद्वान था जो आठवीं सदी में चीन गया था। भारत की यात्रा अनेक चीनी विद्वानों ने की। इनमें सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में आने वाला चीनी यात्री फाहियान (405-411 ई.) छः वर्षों तक भारत में रहा। दूसरा प्रख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग था। ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया।

चीन को रेशम उत्पादन की भूमि कहा गया है। यहाँ के रेशमीवस्त्र चिनशुक कहलाते थे। चीन से रेशम का निर्यात रोम तक किया जाता था।

चीन के काँरवा अपने इस उत्पादन को लेकर जिस मार्ग से गुजरते थे उसे **रेशम मार्ग** कहा जाता था। इसी मार्ग से भारतीय व्यापारी व्यापार करते थे। चीन के बाद भारत का रेशम उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान था।

दक्षिण-पूर्व एशिया के ब्रह्मदेश (म्यांमार), सुवर्णद्वीप (जावा, सुमात्रा तथा बाली), चंपा (वियतनाम) कंबोज (कंबोडिया) आदि भारतीयों से संबंधित थे। आज यद्यपि इनमें से अनेक देश धार्मिक दृष्टि से पूर्णतः बदल गए हैं, परन्तु ये देश कला एवं संस्कृति की दृष्टि से आज भी भारत से जुड़े हैं।

(1) जावा - यह भारत के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। चीनी अभिलेखों के अनुसार यहां 800 वर्ष पूर्व भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा होती थी। यहाँ निर्मित बोरोबुदूर बौद्ध मंदिर संसार का एक सुन्दर स्तूप माना जाता है।

(2) सुमात्रा- यहाँ तीसरी शताब्दी ईसवी में श्री विजय वंश के द्वारा भारतीय उपनिवेश बसाया गया था। पाँच सौ वर्षों बाद कलिंग प्रदेश से गये शैलेन्द्र वंश के राजा ने इस वंश के शासक को पराजित कर अपने शासन की स्थापना की। ये शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। अन्त में राजेन्द्र चोल ने इसे जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।

यह इण्डोनेशिया का वही द्वीप है, जहाँ 26 दिसम्बर 2004 को भूकम्प आया, जिससे हिन्द महासागर में 'सुनामी' नामक भयंकर लहरें उत्पन्न हुई। इन लहरों से अत्यधिक जान-माल की हानि हुई।

(3) बोर्नियो- पूर्वी द्वीप समूह में यह सबसे बड़ा द्वीप है। पहली शताब्दी में यहाँ भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। पांचवीं शताब्दी में यहाँ के शासक मूलवर्मन का उल्लेख मिलता है। मूलवर्मन हिन्दू

धर्म का अनुयायी था।

(4)कम्बोडिया - वर्तमान में यह द्वीप कम्पूचिया या कम्बोज के नाम से जाना जाता है। यहाँ ईसा की प्रथम शताब्दी में दक्षिण भारत के एक ब्राह्मण कौण्डिन्य ने अपने राज्य की नींव डाली। यह कौण्डिन्य वंश कहलाया। इस वंश के राजाओं ने अंगकोरबाट में एक विशाल मंदिर की स्थापना की। यह मंदिर कला की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट है। इस मंदिर की दीवारों पर रामायण तथा महाभारत के दृश्य अंकित है। यह मंदिर विश्व के प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है।

अंगकोरबाट का मंदिर

(5) चम्पा - वर्तमान में यह अनाम कहलाता है। लगभग दूसरी शताब्दी में यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना हुई और लगभग 13 सौ वर्षों तक यहाँ भारतीय राज्य रहा।

(6) थाईलैण्ड (श्याम) - श्याम तीसरी से ग्यारहवीं शताब्दी तक हिन्दू शासकों द्वारा शासित रहा। यहां का महान शासक इन्द्रादित्य था। बाद में यह थाई जाति के प्रभुत्व में आ गया। ये लोग बौद्ध धर्म को मानने वाले थे। वर्तमान में यह क्षेत्र थाईलैंड कहलाता है।

(7) म्यांमार (बर्मा) - बर्मा का प्राचीन नाम सुवर्णभूमि था। सम्राट अशोक ने यहाँ बौद्ध धर्म के प्रचारक भेजे थे। आज भी यह बौद्ध धर्म प्रधान देश है। वर्तमान में यह देश म्यांमार के नाम से जाना जाता है।

(8) सिंहल अथवा सिलोन - लंका (वर्तमान में श्रीलंका) से हमारे देश का संबंध पौराणिक काल से है। अयोध्या के राजा राम ने लंका पर विजय प्राप्त की थी। बाद में काठियावाड के राजकुमार विजय ने यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना की। सम्राट अशोक का पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु यहाँ आये और लंका के राजा तिस्स ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। तब से आज तक लंका बौद्ध धर्म को मानने वाला देश है।

(9) बाली - भारतीय सभ्यता का प्रचार-प्रसार बाली में लगभग सातवी शताब्दी में हुआ। दसवीं शताब्दी में वहाँ के शासक उग्रसेन केसरी का उल्लेख मिलता है। आज भी बाली में भारतीय सभ्यता के चिन्ह मौजूद है।

पाठ में दिए मानचित्र तथा अब तक पढ़े अंशों के माध्यम से नीचे की तालिका को पूरा करो -

क्र.	देश का नाम (वर्तमान)	प्राचीन नाम	दिशा
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			

भारत का विभिन्न देशों से गहरा संबंध रहा यह तुम जान चुके हो। विश्व के महान प्राचीन धर्मों पर भारत का प्रभाव पड़ा है। हमारे देश का सौभाग्य है कि यहाँ हर धर्म के अनुयायी मिलजुलकर निवास करते हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों को भारत में स्थान मिला है। जबकि सनातन (हिन्दू), बौद्ध, जैन व सिक्ख धर्म का उद्‌भव एवं विकास भारत में सबसे पहले हुआ।

यहूदी धर्म

यहूदी हिब्रु लोगों का धर्म था। इस धर्म का संस्थापक अब्राहम था। अब्राहम के पौत्र जैकब को इजराइल के नाम से पुकारा जाता था। इसी के नाम पर इजराइल देश की स्थापना की गयी है। यहूदियों के मंदिर को 'सिनेगांग' कहा जाता है। यहूदियों का विश्वास है कि ईश्वर एक है और केवल उसी की उपासना दिन में दो बार करना चाहिए।

ईसाई धर्म

जेरूसलम के समीप बैथलेहम में ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह का जन्म एक बढ़ई परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम मेरी था। 30 वर्ष की अवस्था तक ईसा ने बढ़ई के रुप में नाजेरथ में निवास किया। बाद में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर एक है और प्रेम, मातृत्व तथा करुणा सबसे महत्वपूर्ण है। कुछ लोग ईसा की शिक्षाओं से सहमत नहीं थे। इन लोगों ने ईसा को सलीब पर चढ़ाया। तथापि ईसा मसीह के विचारों का प्रभाव बढ़ता गया और इसने एक धर्म का रूप ले लिया। ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिन्ह सलीब (क्रास) है। ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक का नाम 'बाईबल' है। इस धर्म के अनुयायी उन सब पैगंबरों

को मानते हैं जिन्हें यहूदी धर्म के लोग मानते हैं।

इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म का उदय अरब में हुआ। इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद का जन्म लगभग 570 ई. में मक्का में हुआ। उस समय राजनीतिक दृष्टि से अरब लोग कई कबीलों में बंटे हुए थे। ये अनेक प्रकार के देवी-देवताओं को मानते थे। चालीस वर्ष की उम्र में हजरत मुहम्मद को ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई। आपका संदेश यह था कि ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और वह उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मक्का निवासियों ने मुहम्मद के इस उपदेश का विरोध किया। इस कारण 622 ई. में मुहम्मद साहब मदीना चले गये। इसी दिन से हिजरी सन् की शुरूआत हुई। मदीना में हजरत मुहम्मद को भारी समर्थन मिला। अपने इन्हीं समर्थकों की मदद से सन् 630 में मक्का पर अधिकार कर लिया।

जिन व्यक्तियों ने हजरत मुहम्मद का संदेश, ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और मुहम्मद उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मान लिया वे मुस्लिम कहलाए और उनका धर्म इस्लाम कहलाया। इस्लाम धर्म के अनुयायी को पांच बातें मानना जरूरी है (1) कलमा पढ़ना, (2) दिन में पांच बार नमाज पढ़ना, (3) साल में एक माह (रमजान) के रोजे रखना, (4) ज़कात (दान देना), (5) यदि सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार हज करना। कुछ पैगम्बरों के नाम कुरान में दिए गये हैं।

63 वर्ष की अवस्था में हजरत मुहम्मद की मृत्यु 632 ई. में हुई। मुहम्मद साहब के जीवन काल में इस्लाम धर्म को मानने वालों की संख्या में बहुत वृद्धि हो चुकी थी। हजरत मुहम्मद का अपना कोई पुत्र नहीं था। पैगम्बर के उत्तराधिकारी को खलीफा कहते हैं। खलीफाओं के नेतृत्व में इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ।

भारत में इस्लाम का आगमन - अरबों ने सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण कर सिन्ध को जीत लिया। यहाँ से इस्लाम का प्रचार-प्रसार भारत के अन्य क्षेत्रों में हुआ। दक्षिण भारत में केरल के तट पर अरब व्यापारी आकर बसने लगे। इन्होंने भी व्यापार के साथ-साथ इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया।

पारसी धर्म

पारसियों का मूल देश ईरान है। प्राचीन काल में ईरान फारस या पारस कहलाता था। पारसी इसी देश के मूल निवासी थे। पारसी, आर्य हैं और इनके धर्म की स्थापना **जरथुस्त्र** ने की थी। इनके प्रमुख देवता आहुर और मजदा हैं। जरथुस्त्र के धार्मिक उपदेशों का संग्रह **'अविस्ता-ए-जेंद'** में मिलता है। भाषाशास्त्रियों के अनुसार यह ग्रंथ भारतीय आर्यों के ऋग्वेद का समकालीन है।

भारत तथा फारस का संबंध प्राचीन काल से ही था। पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के पास अपनी दूत मण्डली भेजी थी। अरब में इस्लाम के उदय के बाद ईरान पर मुसलमानों के आक्रमण होने लगे। सन् 936 ई. में मुसलमानों के भय से पारसी, ईरान छोड़कर भारत पहुँचे। यहां गुजरात के राजा यादव राणा ने उनका स्वागत किया। पारसियों का विश्वास है कि जरथ्रुस्त्र को ही ईश्वर ने अग्नि प्रदान की थी। ईरान छोड़ने के पूर्व ये अग्नि पूजक थे और इस अग्नि को अपने साथ ले आए थे। यह अग्नि आज भी बम्बई के उत्तर में स्थित उदवाद की अगियारी में जल रही है। पारसी लोग मृतक शरीर को पशुपक्षियों के खाने के लिये छोड़ देते हैं।

हिन्दुओं की तरह पारसी कमर में यज्ञोपवीत (सदर-ए-करती) धारण करते हैं। यह प्रथा बताती है कि उन्होंने पवित्र मार्ग पर चलने का वचन ले रखा है।

पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व तालिका को पूरा करें -

क्र.	धर्म का नाम	धर्म संस्थापक तथा पूजा स्थल का नाम	पवित्र पुस्तक
1.	________	________	________
2.	________	________	________
3.	________	________	________
4.	________	________	________
5.	________	________	________

इस प्रकार हम देखते हैं कि कोई आठवीं शताब्दी तक भारत का दुनिया के विभिन्न देशों- चीन, ईरान, श्रीलंका, अरब, रोम, जापान आदि से व्यापारिक एवं धार्मिक संबंध था। कई द्वीपों पर भारतीय उपनिवेश स्थापित थे। भारतीय शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म विभिन्न उपनिवेशों के राजधर्म थे। विभिन्न धर्मप्रचारक भारत से विभिन्न देशों की यात्रा करते थे। ईसाइयों के आगमन के साथ ईसाई तथा अरब आक्रमणों के साथ इस्लाम भी भारत में फैल रहा था। इसी प्रकार कुछ पारसी धर्मावलम्बी पूर्ण रूप से अपने देश को त्याग कर भारत में शरण ले चुके थे।

इन नवीन धर्मों के आगमन से भारतीय समाज, शासन एवं संस्कृति में कई बदलाव आ गये। पूर्व के आक्रमणकर्ता यवन, शक, क्षत्रप तथा कुषाण तो इस देश की माटी में घुल मिल गये। आठवीं शताब्दी में आये

इस्लाम धर्म का अलग अस्तित्व बना रहा। अलगाव के बावजूद इस्लाम धर्म की सरलता ने भारतीयों को प्रभावित किया। सूफी संतों के प्रभाव से इस्लाम तथा हिन्दू धर्म के बीच की दूरियां घटी। इससे इस्लाम और भारतीय धर्मों के बीच एकता का भाव उत्पन्न हुआ। आज भारत एक धर्म (पंथ) निरपेक्ष राष्ट्र हैं यहाँ सभी धर्मों के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. अति लघुत्तरीय प्रश्न

(अ) रोमन इतिहासकार प्लिनी क्यों चिन्तित था?

(ब) कम्बोडिया का प्राचीन नाम क्या था?

(स) रेशम मार्ग से आप क्या समझते हैं?

2. लघुत्तरीय प्रश्न

(अ) श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किसने किया था? यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना किसने की?

(ब) गांधार प्रदेश कहाँ स्थित था और यह क्यों प्रसिद्ध रहा?

(स) अरबों ने भारत से क्या-क्या सीखा?

3 दीर्घउत्तरीय प्रश्न

(अ) इस्लाम धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(ब) पारसी कौन हैं? उनके धर्म की मुख्य बातें लिखिए।

(स) ईसाई धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

4 रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए-

अ. गान्धार क्षेत्र में .... की प्राचीनतम प्रतिमाएँ बनी। (जैन/बुद्ध)

ब. सम्राट अशोक ने पुत्र .... को श्रीलंका बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु भेजा था। (सुरेन्द्र/महेन्द्र)

स. अंगकोरवाट में .... मंदिर है। (विष्णु/शिव)

द. यहूदियों के मंदिर को .... कहा जाता है। (चर्च/सिनेगॉग)

य. हजरत मुहम्मद का जन्म .... में हुआ। (मक्का/मदीना)

र. पारसियों का मूल देश .... है। (इराक/ईरान)

5. **सही जोड़ियां बनाइए-**

क	ख
अ. बर्मा	अनाम
ब. प्लिनी	बुद्ध मंदिर
स. बोरोबुदुर	म्यामांर
द. सिंहल	रोमन इतिहासकार
य. चंपा	श्रीलंका

प्रोजेक्ट कार्य

- विश्व के मानचित्र में उन देशों को अंकित कीजिए जिनके साथ भारत के संबंध थे।

❖❖❖❖